

સવચ્ચે

((((સ્ત્રી ગુરૂ ગોબિંદ સિંઘ જી))))

::::: શિખ ધર્મ દસમ ગુરુ :::::
--- ગુરુમુખી લિપિ રચિત બાણી ---

::: ગુજરાતી લિપ્યાંતરણ :::
એક તુચ્છ સેવક--- સુરિંદરજીત સિંઘ ભંબરા
ઈ-મેલ:- sjsingh2000@yahoo.com



१ॐ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥
पातिशाही १० ॥

त्व प्रसादि सवय्ये

आवग सुध्ध समूह सिधान के देभि इरिओ घर जोग वती के ॥
सूर सुरारदन सुध्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥
सारे ही देस को देभि रहिओ मत कोउ न देभीअत प्राणपती के ॥
श्री भगवान की भाई छिपा हू ते अक रती बिनु अक रती के ॥१॥

माते मतंग वरे वर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥
कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जत निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जत बिचारे ॥
अते भअे तु कहा भअे भूपति अंत कौ नांगे ही पांई पधारे ॥२॥

जत इरै सभ देस दिसान को आगत ढोल म्रिदंग नगारे ॥
गुंजत गूड गजान के सुंदर हिंसत हँ हयराज हजारे ॥
भूत भविष्म भवान के भूपत कउन गनै नहीं जत बिचारे ॥
श्री पति श्री भगवान भवे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ॥३॥

तीरथ नान दईआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेभै ॥
भेद पुरान कतेभ कुरान जमीन जमान सभान के पेभै ॥
पउन अहार वती वत धार सबै सु बिचार हजर क देभै ॥
श्री भगवान भवे बिनु भूपति अक रती बिनु अक न लेभै ॥४॥

सुध्ध सिपाह दुरंत दुआह सु सावि सनाह दुरजान दलेंगे ॥
भारी गुमान भरे मन में कर परभत पंभ हले न हलेंगे ॥
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलेंगे ॥
श्री पति श्री भगवान छिपा बिनु तिआगि जहान निदान चलेंगे ॥५॥

